



वेदाङ्ग

(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी-प्रचार विभाग

Arya Pratinidhi Sabha Fiji

P.O. Box 4245, Samabula.

JANUARY - MARCH ISSUE 1998

NO. 18

संस्कार

पिछले अंक से आगे

निष्क्रमण संस्कार

निष्क्रमण संस्कार छठा संस्कार है। निष्क्रमण का अर्थ है - बाहर निकालना। अब तक बच्चा घर की चार दीवारी के अन्दर पल रहा था। घर के बन्द वातावरण में ही उसे नहीं पड़े रहना है, उसे बाहर भी निकलना है। अगर इस संस्कार की गहराई को समझा जाय, यह समझा जाय कि इस का उद्देश्य सूर्य शक्ति से अनुभव किया गया प्राण-वायु के महत्त्व पर बल देना है, बच्चे को निचले जीवन से निकालकर प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक स्वस्थ जीवन के लिये तैयार करना है, तो 'निष्क्रमण संस्कार' का महत्त्व अन्य किसी संस्कार से कम नहीं रहता।

निष्क्रमण संस्कार का समय

अगर बच्चा कमजोर हो, तो तीन महिने बाद और अगर हूट-पुष्ट हो, तो दो महिने बाद उसे बाहर की हवा तथा सूरज की धूप में लाना-ले जाना चाहिये। इससे पहले बच्चे को बाहर लाने-लेजाने से उसे ठंड या गर्मी लग सकती है। निष्क्रमण संस्कार को धार्मिक-संस्कार के रूप में सोलह संस्कारों में स्थान देने का अभिप्राय यह है कि इस तरफ माता पिता का अवश्य ध्यान जाना चाहिये। जैसे युवा हो जाने पर स्वास्थ्य के लिये कई नियम बना दिये जाते हैं जैसे सुबह व्यायाम करना, शाम को फुटबाल आदि खेल में भाग ले ताकी उसका शरीर हूट-पुष्ट हो जाय, इसी तरह जन्मते ही बच्चे के लिये संस्कार के रूप में यह आवश्यक कर दिया गया है कि दो या तीन महिने बाद वह घर के बन्द वातावरण में ही न पड़ा रहे किन्तु घर से बाहर साफ हवा तथा मीठी-मीठी धूप का सेवन करे।

शरीर रचना विशेषज्ञों का कहना है कि हमारे शरीर के बराबर विकास के लिये कैल्सियम (calcium) तथा फॉस्फोरस (phosphorous) का खपना आवश्यक है। जितने अंश में रक्त में कैल्सियम की कमी होगी उतने ही अंश में मनुष्य बेचैन तथा चिड़चिड़ा रहेगा। विटामिन 'डी' (Vitamin D) के बिना कैल्सियम शरीर में जम्ब नहीं होता। विटामिन 'डी' न दूध में है न दही में है। यह सूर्य की धूप से ही मिल सकता है, इसलिये सूर्य की किरणों का सेवन आवश्यक है ताकि विटामिन 'डी' की कमी के कारण कमजोर न रहे और कैल्सियम तथा फॉस्फोरस दोनों धूप के प्रभाव से शरीर में खप सके।

सूर्य के दर्शन का महत्त्व - विश्व का नियन्त्रण दो ही तत्व करते हैं - एक है ऊष्णता का तत्व, दूसरा है शीत का तत्व। भौतिक दृष्टि से शरीर में गर्मी जीवन का चिन्ह है शरीर का ठण्डा पड़ जाना जीवनी शक्ति में कमी आ जाने का चिन्ह है। मानसिक दृष्टि से मन का गतिशील होना मानसिक बल का चिन्ह है, मन का गतिहीन हो जाना मानसिक कमजोरी का चिन्ह है। इसलिये जीवन के पथ पर पहला कदम रखते ही बच्चे को सूर्य के दर्शन कराये जाते हैं अर्थात् बच्चा सूर्य की तरह गतिशील हो।

चन्द्र के दर्शन का महत्त्व - चन्द्र का काम शीतलता है। अधिक गर्मी भी नुकसान पहुंचा सकती है। मानसिक दृष्टि से बहुत तीव्र गति से चिन्तन मनोविकार उत्पन्न कर सकता है, इसलिये पागल को Moon-struck या Lunatic कहते हैं। अंग्रेजी में Luna का अर्थ चाँद है। चन्द्र के दर्शन कराकर पानी को अजलि में लेकर नीचे फेंक दिया जाता है। नीचे फेंकने का अर्थ यह है कि चाँद से उत्पन्न मनोविकारों को नीचे धकेल देना। जब कोई भी शक्ल को धारण कर सकता है, इसी प्रकार मन भी, कोई भी भावना को ग्रहण कर सकता है। मन उच्च भावना ग्रहण करे, जैसे सूर्य जल को वाष्प बनाकर ऊपर उठा लेता है। नीचे की भावना का त्याग करे, जैसे अजलि में धरे जल को हम नीचे फेंक देते हैं - यह इन सब विधियों का भाव है।

अन्नप्राशन संस्कार

संस्कारों के सिलसिले में अन्नप्राशन सातवा संस्कार है। अन्नप्राशन का अर्थ है जीवन में पहले-पहल अन्न का खाना। बच्चे को जन्मते ही मा का दूध मिलता है। उस समय न तो अन्न चबाने के लिये उसके दांत होते हैं, न अन्न हज्म करने लायक उसका हाजमा होता है। उस समय जो भोजन उसके लिये सम्भव हो सकता है उसका प्रबन्ध परमात्मा ने उसके लिये कर दिया है। इतना ही नहीं कि उसका उसने प्रबन्ध कर दिया, परन्तु प्रभु की ऐसी रचना है कि उस भोजन को दूढ़ने के लिये उसे कहीं नहीं जाना पड़ता।

अब यह प्रश्न रह जाता है कि मा के तथा बच्चे के स्वास्थ्य की दृष्टि से कबतक उसे दूध पर निर्भर रहना चाहिये ताकि मा का स्वास्थ्य भी बना रहे तथा बच्चे का पोषण भी चलता रहे।

(१) मा की दृष्टि से - दूध के भीतर मुख्य पोषक तत्व कैल्सियम (Calcium) है। मा का दूध पिलाने का अर्थ है कि वह अपने शरीर के भीतर का कैल्सियम बच्चे को दे रही है। इसका यह अर्थ हुआ कि जितनी देर तक वह बच्चे को दूध पिलाती रहेगी उतनी देर तक कैल्सियम की दृष्टि से उसका शरीर कमजोर होता जाएगा। यही कारण है कि जो माताएं देर तक बच्चे को दूध पिलाती रहती हैं वे कमजोर होती जाती हैं। प्रकृति ने दूध पिलाने का समय स्वयं निश्चित कर दिया है। जब बच्चे के दांत निकलने लगें तब समझ लेना चाहिए कि अब अन्न चबाने का समय इसका नजदीक आता जा रहा है। ऐसी हालत में मा को स्वयं दूध पिलाने में कमी कर के, अन्न की तरफ ध्यान देना चाहिये। अकसर देखा जाता है कि कई माताएं इसकी तरफ ध्यान नहीं देती, कमजोर होती जाती हैं परन्तु बच्चे को दूध पिलाती रहती हैं। अन्नप्राशन संस्कार को धर्म का अंग इसी दृष्टि से बना दिया गया है कि निश्चित समय के आने पर मा को अपना दूध पिलाना बन्द कर देना चाहिये और बच्चे के पोषण के लिये अन्न आदि की तरफ ध्यान देना चाहिये ताकि माता का शरीर कमजोर न हो जाय। संस्कार निश्चित कर देने से माता का ध्यान मजबूरन इस ओर जायगा, नहीं तो पास-पड़ोस के ही लोग अन्नप्राशन का समय बीत जाने पर भी शिशु को मा का दूध पीते देखकर पूछेंगे कि अरे, क्या इसका अन्नप्राशन तुमने नहीं किया? मा के दृष्टि से अन्नप्राशन का महत्त्व उसके शरीर की रक्षा है।

(२) शिशु की दृष्टि से - इसमें सन्देह नहीं कि दूध में सब प्रकार के पोषक तत्व हैं, परन्तु प्रकृति ने सिर्फ दूध पर रहने के लिए नहीं बनाया। जब तक दूध की जरूरत है और पेट नरम है, तब तक तो शिशु के दांत नहीं होते, परन्तु जब वह पुष्ट होकर अन्न को हज्म करने लायक हो जाता है तब उसके दांत निकलने लगते हैं ताकि वह अन्न को चबा सके और उसे खाकर अपना भरण-पोषण कर सके।

बच्चे को दूध से एकदम अन्न पर नहीं लाना चाहिये। शिशु शुरु में केवल दूध पीने वाला होता है परन्तु अन्न प्राशन संस्कार के बाद दूध और अन्न खाने वाला हो जाता है। दांत निकलते समय बच्चे के शरीर में उथल-पुथल मच जाती है।

अन्न प्राशन करने की विधि - संस्कार विधि अनुसार यज्ञ करने के पश्चात् भात में दही, शहद और उस में घी थोड़ा-थोड़ा मिलाके बच्चे की रूची अनुसार निम्न मन्त्र पढ़कर उसे खाने को दे :

ओम् अन्नपते ऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।

प्र प्र दातार तारिष ऊर्ज नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ यजुर्वेद ११। ८३ ॥

अर्थ - हे अन्न के स्वामी परमात्मन् ! हमको रोगरहित और बलदायक अन्न दीजिए। अन्न का दान करने वाले को सुखी रखिए। हमें दो पैर वालों को तथा चार पैर वालों को यह अन्न शक्ति देवे।

अगले अंक में मुण्डन संस्कार